

6वाँ दोहा प्रजातंत्र मंच समाप्त हुई

माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी

कत्तर में हो रहे 6वां रजातंत्र, विकास और मुक्त व्यापार के मंच गुरुवार 13 अप्रैल, 2006 को समाप्त हुई। आज हुई तीन सभाओं में मानव अवकाश, युवकों के कार्यभाग और राजनैतिक सुधरावों में नागरिक समाज संस्थापनों बारे में विचार विमर्श की है। इसके अलावा अरब विश्व के सुधराव प्रतियाओं के बारे में भी चर्चा हुई

कत्तर के प्रथम उपप्रधान मंत्री एवम विदेशकार्य मंत्री माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी ने प्रजातंत्र के मौलिकता के बारे में जोर की। उन्होंने कहा कि इसके लक्ष्य सामाजिक इनस्फ के परिपालन करना है। माननीय प्रथम उप प्रधान मंत्री ने कहा कि संस्थापनों, मानव अवकाशों, प्रशासन में जनता के हिस्सेदारि और सक्रियता के पारदर्शनियता से ही एसे राष्ट्र के निर्माण हो सकते हैं।

प्रजातंत्र, विकास और मुक्त व्यापार के 6वाँ दोहा मंच में बुधवार, 12 अप्रैल 2006 को प्रभाषण करते हुए ममाननीय प्रथम उपप्रधान मंत्री एवम विदेशकार्य मंत्री माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी ने कहा कि प्रजातंत्र सिर्फ एक औपचारिक क्रिया नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र के विजय के लिए एस संपूर्ण विकास योजना होना चाहिए जिससे राज्य के आर्थिक एवम सामाजिक क्षेत्र के विकास के लिए एक प्रारूप होना ज़रूरी है। उन्होंने कहा सिर्फ इसी मार्ग से ही किसी भी राज्य में प्रजातंत्र के विजय होगा।

आतंकवाद के निर्वचन के बारे में बताते हुए माननीय प्रथम उपप्रधान मंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सभा ने इस को अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से साथ नाता रखते हैं। इस तरह के आतंकवाद कई से निर्दोषियों के जीवन को खतरा होते हैं और मौलिक स्वतंत्र्य को धमकाते हैं। उन्होंने कहा कि अभी तक अंतर्राष्ट्रीय समूह ने आतंकवाद को निर्वाचित नहीं किए हैं। अगर एसे निर्वचन करने मे सहमत होगो तो भी आतंकवाद को तत्वप्रदान विचारों से शक्ति हासिल करते हैं जिसे लोगों पर हिंसा और आतंक पैदा करते हैं।

माननीय प्रथम उपप्रधान मंत्री एवम विदेशकार्य मंत्री माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी ने चेतावनी दिया कि गरीबी, अत्याचार और नैश्य से आतंकवाद जन्म होते हैं। उन्होने कहा कि इसे लोग शहीदी और त्याग के विचार होते हैं जिससे कई जीवन के नाश होते हैं जिसमें अपराधकर्ता भी शामिल होते हैं। उन्होंने कहा कि इन अपराधकर्ताओं के नज़ में यह सिर्फ एक आसान और न्यायिक क्रिया है जिसे मौलिक परिवर्तन हासिल करने के उद्देश्य है। माननीय उपप्रधान मंत्री ने कहा कि यह प्राथमिक तौर से एक राजनैतिक, मानसिक, धार्मिक और कानूनी मसला है।

उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण रिश्तों के परिपालन करने के अवश्यता के बारे में जोर दिया और कहा कि अत्याचार और नैराश्य विचार से ही आतंकवाद पैदा होते हैं। उन्होंने कहा कि कई प्रबल राष्ट्रों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थापनों से लोग निराश होते हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ अनुष्ठानों में घोषणा करने से नहीं बल्कि आतंकवाद को सामना करना है।

©विदेशी सूचना साधन, कतर, सारे अधीकार आरक्षित